यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ

तत्सदात्मने नमः

मन चिंतवन करता है, संकल्प विकल्प करता है, इसमें इनर्जी खर्च होती है। और जब श्वासा में लगेगा–ओ–म, ओ–म, ओ–म, तो चिंतवन बंद रहेगा। इनर्जी खर्च नहीं होगी। जो इनर्जी बनेगी वह रिज़र्व होती जायगी। और जब ज़्यादा हो जायगी, तो ताकत के रूप में इकट्ठी हो जायगी। उससे हम कुछ भी काम ले सकते हैं। उससे भजन कर सकते हैं। युद्ध कर सकते हैं। साधन कर सकते हैं, शत्रुओं से लड़ सकते हैं। इसलिए शक्ति रहना चाहिए। ऐसा नहीं कि इसमें उसमें खर्च किया। श्वासा में मन को लगाओ, और उसमें खड़ा करो। श्वासा में नाम को सुने। इसका नाम है, अजपा–यह जपा नहीं जाता। जो जपा न जाय। अपने से हो रहा है, आटोमैटिक। उसका नाम है–जप का उलटा अजपा।

"उलटा नाम जपत जग जाना।
बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।।"

इसी तरह जपा था बाल्मीकि ने। बाल्मीकि पहले डाकू था। जो सामान लूटता था, अपने घरवालों को देता था। एक मर्तबा महात्मा लोग (सप्तर्षि) निकले उधर से। तो बाल्मीकि ने देखा और डांटा–ऐ। यह लोटिया–डोर जो भी है, रखो। तो महात्मा जो होते हैं, निर्भय होते हैं। उन्हें किसी का डर नहीं होता। बोले क्या बात है भाई? उसने फिर डांटा–अभी बात करता है, मारूंगा मर जाएगा अभी। रखो सब। महात्मा बोले–अरे क्या हुआ भाई, क्यों रख दें– इधर आ। क्या इस लोटिया डोर से तेरी जन्म भर की कंगाली दूर हो जायगी? क्या ये चदरी–कपड़े लेने से तेरी कंगाली दूर हो जायगी? उसने फिर डांट कर कहा, कैसी बात करते हो? उन्होंने कहा–हम ठीक बात करते हैं। हमारे पास बड़ा सोना है। ऐसी युक्ति है, कि इस पहाड़ को छू दें तो सोना बन जायगा। तुझे तो लूटना भी नहीं आता। लूटना आता हो तो असली चीज़ लूट। वह चकाचौंध हो गया, कि मैं जिसे डांटता हूँ वह सब समान छोड़कर भाग जाता है, और ये कैसे बाबा हैं। फटीचर कम्पनी। ये तो डरते ही नहीं। तो जानते हो, डाकू लालची होते हैं। बोला, बताओ कहाँ लिए हो सोना। तो कहा हम लिए नहीं हैं–जहाँ हम खड़े हैं, यहाँ सोना ही सोना गड़ा है। हमारी ये उंगलियाँ हैं न, जहाँ छू दें सोना ही सोना हो जायगा। तुम अच्छे आदमियों से भेंट कर लिये। अच्छे साहूकार, तुम्हें मिल गए हैं–लूटो कितना लूटना है। तो कहा–बताइए। अब लाइन में आ गया।

तो जब दो आदमी मिलते हैं, तो वनथर्ड एक दूसरे की जानकारी आ जाती है, और जब वार्तालाप होता है, डिस्कसन होता है, तो दूथर्ड आ जाती है। तो अब उस पर प्रेशर आ गया–एक तो महापुरुषों की वाणी। बहुत वजनदार होती है, वेट रहता है, प्रेशर रहता है। तो उसका अहं थोड़ा डोला और पूछनेलगा–कि आप लोग कौन हैं, यह बताइए। तो बोले–हम होंगे जो होंगे, तुम्हें जो करना है, वह करो। और यह जो लूट–लूट कर यह पाप करता है, इसे कहाँ ले जायगा? दुनिया में आदमी पैदा होता है, तो नंगा ही पैदा होता है। खाली हाथ आता है। खाली हाथ जाता है, यह सब यहीं छोड़कर। यह क्या रच दिया है, दुनिया में आदमी ने? थोड़ी देर के लिए, यहाँ आना पड़ा, तो यह क्या माया रच दिया है? तो महात्मा लोग आसन लगाकर बैठ गए और बोले, कि जाओ अपनी स्त्री से पूछो–माता से पूछो, परिवार के सब लोगों से पूछो कि यह जो धन मैं लूट–लूट कर लाता हूँ। अत्याचार करके लाता हूँ। उसका जो पाप होगा, पश्चाताप होगा उसमें तुम लोग हिस्सा बटाओगे? जाओ, हम यहीं बैठे हैं। हम जाएंगे नहीं। पूछकर आओ, हम तुम्हारा निर्णय करके ही जाएंगे। तो वह गया, माता–पिता से पूछा–तो कहे, भाई, यह तुम्हारा कर्तव्य है, किसी ढंग से लाओ, हम क्या जानें। हमारी सेवा करना तुम्हारा धर्म है। पाप से लाओगे, तो पाप भोगोगे। कमाई से लाओगे, तो पुण्य भोगोगे। हम तो उसमें शामिल हैं नहीं। पत्नी से पूछा, उसने भी कह दिया। तो लगा एक चपका। थोड़ा मिजाज लाइन में आया।

महात्मा लोग मर्मज्ञ होते हैं। जब किसी को सुधारना होता है, तो उसकी वैसी गतिविधि बन जाती है। और वैसी शैली बन जाती है। आया लौटकर, चुपचाप बैठ गया। बोला, उन लोगों ने तो सबने जवाब दे दिया, कि हम नहीं जानते। मैंने तो बहुत पाप किया है। हजारों लोगों को लूटा है, मारा है, परेशान किया है और ये सब करके जिन्हें मैं देता था वे सब मुमानियत करते हैं, कि हमसे क्या मतलब। तुम जैसे करके लाओगे, वैसे भोगोगे। तुम्हारा धर्म है, हमारी सेवा करना। फिर मैं क्या करूं? तो बदल गई दुनिया। फिर मेरा उद्धार कैसे हो? तो बोले, राम राम, ओम ओम कहो, न खाओ न पियो, बैठे रहो रात–दिन। उसने कहा, मैं राम राम तो नहीं कह सकता। मैं मरा–मरा कह सकता हूँ। यही मैं करता था, यही कह सकता हूँ। तो बोले तुम जो भी कहो, कन्टीन्यू कहते रहो। तार न टूटे। और बस नाम जपो फिर हम लोग आएंगे, तुमको देखेंगे। एक युग के बाद आएंगे। मान लो बारह साल का युग होता है। 12 साल बाद आएंगे। फिर तुमको देखेंगे।

अब वह बैठ गया। जपने लगा, मरा, मरा, मरा तो घूमकर राम राम आ जाता है। जपते–जपते उसकी धुन लग गई। दीमक लग गई, बांबी बनगई। फिर भी

उसमें गुनगुनाहट आती रही। फिर वह भी बन्द हो गई। बैखरी से शुरू किया था। कंठ में आ गई, मध्यमा बन गई, फिर पश्यंती में आ गई। अब श्वासा से जपने लगा, फिर वही परा में बदल गई। जब परा में पहुंच गया तो बस मन खड़ा हो गया। बदलते बदलते परावाणी में पहुंच गया, आटोमैटिक हो गया। इधर से क्षमा, दया, कृपा ये सब धाराएं गई। ध्यान, नाम, समर्पण, प्रार्थना ये चारों जाकर चरण में लीन हो गई। क्रिया में साधक चलते-चलते लक्ष्य को प्राप्त कर लिया। और ग्रेविटी से निकल कर आटोमैटिक क्रिया हो गई। स्वाभाविक गुण आ गया। और अन्वय व्यतिरेक युक्ति द्वारा चेतन का प्रतिबिम्ब मिल गया। एक तानता मिल गयी। ध्येय, ध्याता और ध्यान तीनों एक हो गए। तो एक तानता में अनुगत, अन्वय व्यतिरेक युक्ति से चेतन की मदद मिल गई। जब चेतन की मदद मिल गई तो उसका रूपांतर हो गया। और रूपांतर होकर वह आटोमैटिक में बदल गया। स्वाभाविक जाप होने लगा। अजपा होने लगा। जपना न पड़े और जप होता रहे। तो- कहना तो यह चाहिए कि-

"अजपा नाम जपत जग जाना।

बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।"

लेकिन गोस्वामी जी की शैली अपने ढंग की है। वह चाहते हैं कि बाहरी बात हम कह दें, और उसमें गहराई की बात भी छिपी रहे। समझने वाले समझ जायें और न समझने वाले न समझें। जो योग्य हैं, समझें। और जो अयोग्य हैं, वह न समझें। इस तरीके से उन्होंने यह उचित समझा कि-उलटा नाम जपा जग जाना। बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।। सीधा न करके उल्टा। तो सीधा का उल्टा, उल्टा, और उल्टा का उल्टा सीधा। जप का उल्टा अजप और अजप का उल्टा जप। तो अगर सीधा वो लिख देते कि 'अजपा नाम जपा जग जाना।' तो सब लोग समझ जाते कि यह भी कोई योग की प्रक्रिया है। ऋषियों ने उसे यह प्रक्रिया बताई होगी। साधना करने का तरीका बताया होगा। तो ऐसा न करके उन्होंने उलटा लिखा। लेकिन बात एक ही है। चाहे सीधा कहो या जप कहो। चाहे उल्टा कहो या अजपा कहो। बात एक ही है।

इसलिए- **"अजपा नाम जपा जग जाना।**

बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।"

यही अजपा है, उल्टा नाम का जपना। इसे ही किया था बाल्मीकि ने। तो यह अजपा का जो विषय है, यह श्वासा की गति विधि से पकड़ में आता है। यह

श्वासा, वासुकी सर्प के समान है। यह शरीर समुद्र के समान है। और कच्छप कुंडलिनी के समान है। और ये दैत्य और देवता इसको खींचने वाले हैं। अंदर समुद्र मंथन होगा। और जब इसका मंथन होगा, तो इसमें चौदह अध्यात्मरूप चौदह रत्न, निकलते हैं। पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन बुधि, चित, अहंकार चार अंतःकरण। ये चौदह अध्यात्म हैं। इनमें 14 अधिभूत और 14 अधिदैव, इन्हें मिलाकर 42 तत्वों की जाग्रत अवस्था है। इसी का रिएक्शन स्वप्न अवस्था है। और इन दोनों के अपोजिट सुषुप्ति अवस्था है, जब ध्यान में पहुंच जाता है और तीनों अवस्थाओं में एक हो जाती है तो वह तुरीया अवस्था है। और उसका भी जब त्याग कर देता है तो तुर्यातीत हो जाता है। फिर साधक सर्कुलेशन के बाहर हो जाता है। फिर वह साधक राइज हो जाता है, उठ जाता है। इस तरीके से बस श्वासा का काम है–जपना। जब तक तुम मन को खड़ा करके, सुनने की क्षमता नहीं रखते हो, तब तक हर श्वास में जाप करो। ओ–म, ओ–म। बाद में जपना नहीं पड़ेगा। देखते रहो श्वासा कहाँ आती है कहाँ जाती है ? कैसी आती है, क्या कहती है ? यह अपने आप बता देगी। जब–

'रिनिक धिनिकध्वनि अपने से उठै।'

तब फिर, 'अब तो अजपा जप मन मेरे।'

इसके जपने की विधि अगर आ जाय, तो इससे बड़ा कोई जाप नहीं है। इससे अच्छा शुद्ध तरीका मुक्ति पाने का, ईश्वर को पाने का, दूसरा कोई नहीं है। सबसे उच्च कोटि की चीज़ है। और इससे ही फिर आदमी ग्रेविटी पार करके आटोमैटिक बन जाता है। स्वाभाविक जाप होने लगता है। तुम सोओ तबभी जाप बन्द नहीं होगा। तुम चलो तब भी जाप होता रहेगा। तुम खाना खाओ तब भी जाप होता रहेगा। तुम रो रहे हो तब भी जाप बंद नहीं होगा। तुम हंस रहे हो तब भी जाप बंद नहीं होगा। वह गति आ जाती है। और यह सबसे उच्च कोटि की गति है। जीवन–मुक्त गति है।

अगर यह श्वासा खड़ी हो जाय, तो उसका रूपांतर हो जाता है। इस तरीके से। इसका (श्वासा जप का) काम केवल क्या है? यह कुंडलिनियों को जाग्रत करती है। कुंडलिनियों में क्या है? कुंडलिनियों में हार्मोन्स हैं। जीवन तत्व हैं। अलौकिक तत्व हैं। नाभि कमल में कुंडलिनी है–सर्पिणी है। इसमें विष्णु और लक्ष्मी का निवास है। यह अनाहत की कुंडलिनी हृदय है, इसमें शंकर और पार्वती का निवास है। और ये

कंठ्कूप कुंडलिनी है, विशुद्ध जिसे कहते हैं। इसमें ब्रह्मा और सरस्वती काम करेगी। समय पर सब काम करेंगे। उसको गरज किसी की नहीं है। उसका स्वरूप क्या है–

'अनपेक्षः शुचिर्दक्षः

इच्छा रहित है। और फिर भी ये सब लाजमी आकर पड़े रहते हैं।

तवन घर चेतौ रे भाई।

तेरा आवागमन मिट जाई।

जा घर लक्ष्मी झाड़ू देति है शिव करै कोतवाली।

जा घर ब्रह्मा बने टहलुआ विष्णु करै रखवारी।।

जहाँ ये सब पहरा देते हैं, ड्यूटी बजाते हैं। वह घर देखना चाहिए। यह अलौकिक तरीका है। इसका केवल एक ही तरीका है। और वह है जाप। अगर नहीं अभ्यस्त हैं, तो भी लगा रहना चाहिए। चाहे रा–म, रा–म जपो चाहे ओ–म, ओ–म जपो। चाहे, सोहं सोहं, चाहे कुछ भी जपो। जिसमें तुम्हारी रुचि हो जाय। जन्म जन्मांतर से जो हमारी कुंडलिनियां अधोगति को हो गई हैं, और जो अन्तःकरण में जन्म जन्मांतर से गलत चिंतवन कर डाला है। ये सब बजाय हमको ताकत देने के, सब जहर दे रहे हैं। ये उल्टा हो गये हैं। और इनके वो मुंह खुल गए हैं जो अपोजिट हैं। क्या खुल गए हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा तृष्णा, ये खुल गए हैं। इन्हें बंद करना है। इनको खतम करना है। और ज्ञान, वैराग्य, शान्ति, संतोष, क्षमा, दया इन सद्गुणों को लाना है। इनको खोजना है। तब फिर यह वाणी जब सही कुण्डलिनियों से जाग्रत होगी और जब सही समसुरा संबंधित अनुभव लेगी। और प्राण अपान, ब्यान, समान और उदान इन पांचों को जब सही संतुलन बनाएगी, तब इसमें ताकत आएगी। और जब ताकत आएगी, तो फिर कुंडलिनियाँ जगेंगी। और जब कुंडलिनियाँ जगेंगी, तो इसे बैकुण्ठ कहा जायगा। बैकुण्ठ दरबार लगेगा। इंद्रियाँ, रिद्धि–सिद्धि बन जायेंगी, कृष्ण–आत्मा, ब्रह्मज्ञान, वृन्दावन बन जायेगा। मन, मथुरा बन जाएगा। अमृत की वर्षा, बरसाना हो जायगा। वहां राकी धारा राधा मिल जायेगी– श्वासा में श्वासा के जाप की। तब रास लीला होगी, रहस्य मिल जायगा। कम्युनिकेशन होने लगेगा। फिर धाम मिल जायगा। तो ये जप करने से, कुंडलिनियाँ जगेंगी। कुंडलिनियाँ जगेंगी, तो इनर्जी मिलेगी। इनर्जी मिलेगी तो, सब परिणाम मिलने लगेंगे। और शान्ति का साम्राज्य आ जायगा। रामराज्य आ जायेगा।

'राम राज नभगेश सुनु सचराचर जग मांहि।

काल कर्म स्वभाव गुन कृत दुख काहुहिं नांहि।

काल कर्म स्वभाव और गुण चले जाएंगे। तो अगर बाहर का राम राज्य होता तो यह दुनिया काल कर्म स्वभाव गुण के बगैर कैसे रह जायगी। काल खतम हो जायगा। कर्म खतम हो जायगा तो सब पत्थर हो जायेंगे जड़वत, स्तम्भ हो जायेंगे। यह हरकत कर्म से ही होती है। काल, कर्म, स्वभाव और गुण इन्हीं से तो संसार है। ये न रह जायेंगे, तो दुनिया कैसे रहेगी ? काल कर्म सुभाव गुण जब ये चारों चीज़ें जीवन्त रहें तब दुनिया रहेगी।

'काल कर्म सुभाव गुन घेरे।
फिरत सदा माया के प्रेरे।।

दुनिया में ये रहेंगे। हाँ, तो ऐसा राम राज्य जिसमें काल, कर्म नहीं रह जाते, वह किसी साधक के हृदय में आता है। यह फलाप्ति है। साधना का परिणाम है। स्वानुभूति है।

काल, कर्म, स्वभाव, गुण

इनको जो खतम कर दे, वह प्रभु है,विभु है। जीवत्व खतम हो जाय। एक आदमी के हृदय में होती है, यह क्रिया। इसीलिए कहते हैं, राम राज में काल कर्म सुभाव गुण नहीं था–तो जिसके हृदय में राम राज हो जायेगा। उसके हृदय में ये सब नहीं रहेंगे। फिर राम राज्य ही राम राज्य रह जायेगा वहाँ। सबमें नहीं हो सकता। उनमें होता है जो अन्दर ट्रांसफार्म करते जाते हैं। बाहरी चीज़ को अन्दर ले जाने का प्रयास करते हैं।

'यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ।।'

कोई–कोई जानता है। सब नहीं जान सकते। अवध क्या है? एक अवध और है अन्दर। हाथी के दांत दिखाने के अलग, खाने के अलग। बाहरी दांतों के भरोसे तो मर जाएगा, वो खाने के दांत अन्दर होते हैं। इसी तरह हर चीज़ के दो रूप रहते हैं। एक दुनिया वालों के लिए, एक महात्माओं के लिए। जैसे राम एक राजा का लड़का था, और भगवान भी हुआ। अब सुप्रीम कोर्ट में कोई फैसला होता है, तो किसी मामले में जब कोई सीनियर वकील जज के सामने बहस करता है, तो सुप्रीम कोर्ट के फैसले की नज़ीर रखता है। तो राम, राजा दशरथ का लड़का अगर भगवान हो सकता है, तो किसी का भी लड़का भगवान हो सकता है। एक नज़ीर पास हो गई। तो ऐसे क्या सबके लड़का भगवान हो जाएंगे? अब तुमसे पूछें कि तुम भगवान हो? तो कीं–पीं करोगे। कहोगे नहीं, भगवान तो भगवान होते हैं।

एक थे महात्मा, तो दिन भर ब्रह्मज्ञान बताया करें। तो पंडित लोग परेशान हो गए कि कहां का कपरफोर आ गया है कि ब्रह्म ज्ञान बताता है। हमारा कर्मकांड नहीं बताता। हमारी जजमानी फेल हुई जा रही है। और इसके ब्रह्म ज्ञान के मारे हमारा सब कर्मकाण्ड फेल हुआ जा रहा है। तो पण्डितों ने सोचा, चलो झगड़ा किया जाय। आए दो चार लोग। बाबा ने कहा कि एक ब्रह्म है। वे बोले, कि यह बताने वाला तो अलग हो गया। क्या बता रहे हो? तो बाबा ने कहा, कि हां भाई हमारा दिमाग फिर गयाहै। ये सिर के बाल बढ़ गए हैं। ऐसा करो कि एक नाऊ बुला लो तो फिर हम आपसे बात कर सकते हैं, अभी हमें गर्मी लग रही है। नाऊ बुलाए। नाऊ ने बाल बनाए। तो बाबा ने कहा, नाऊ यार! तू तो भगवान है। बड़ा भारी काम कर दिया तुमने। नाऊ ने कहा अरे! नहीं महराज मैं भगवान नहीं हूं, मैं तो जीव हूँ। मैं भगवान कैसे हो सकता हूँ? तो महात्मा ने पंडित से कहा– कि पंडित जी, देखो जो झगड़ा तुम हमसे मचाए हो कि हम अलग और भगवान अलग। यह बात तो यह नाऊ भी जानता है, कि मैं जीव हूँ, भगवान नहीं हूँ। न पढ़ा न लिखा, गरीब, गंवार आदमी। बुद्धि का ठिकाना नहीं है, तो भी जानता है कि मैं अलग हूँ और भगवान अलग है। और जो तुम पढ़े लिखे आदमी इस तरह की बात करते हो–यह कितनी अज्ञानता है। दुनिया द्वैत तो है ही। अब द्वैत में अद्वैत दिखाओ, अगर बड़े विद्वान हो। अगर सिद्धान्त तुम्हारी समझ में आ गया है, तो द्वैत में अद्वैत दिखाओ। तो प्रणाम करके चले आए–अब बात करने की जगह नहीं रह गई। तो इस तरीके से जाप करना चाहिए और उत्तरोत्तर बढ़ते जाना चाहिए। बढ़ते बढ़ते फिर जो यह कृत्रिम साधना है, उसे आटोमैटिक बना देना चाहिए। लेकिन यह करने की चीज है साधना। बातें करते रहने से परिणाम नहीं मिलता।

अब बताते–बताते तो पहुँच गए। लेकिन वह बात तोजब स्वयं वहां पहुँचे, तब बनेगी। सारी बातें समझ लेने से जानकारी मिल जाती है, और अपने को तौलने का तरीका भी मिल जाता है, कि हम कहाँ हैं। किस स्तर पर– यह शुभेच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति, असंसक्ति, पदार्थाभावनी, कौन भूमिका में– मेरी स्थिति है। यह समझ लेना चाहिए। इस तरह जब साधक कुछ भजन ध्यान में प्रगति कर लेता है, थोड़ा शान्ति प्राप्त कर लेता है। भगवान का कुछ कनेक्शन मिल जाता है–अपने बल पर तो कुछ होता नहीं–इधर से भगत तो भगवान के लिए रोता ही रहता है। और रोने के अलावा कुछ ताकत होती तो ललकार न देते। वह तो माया से भी भगवान के लिए रोता है, कि मुझे भगवान की तरफ जाने दे, प्रार्थना में यही तो सब कुछ रहता है। तो यह माया से भी रो रहा है। लेकिन एक अवस्था ऐसी आती है साधना

करते करते, कि भगवान का सहारा मिल जाता है। अभी तक इस काया रूपी किले में, ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, सब अधिकार किए पड़े थे। तो अब इस अवस्था में आकर साधक कह पाता है, कि भाई अब मुझे भगवान का सहारा मिल गया है–अब तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यह शुद्ध अहंकार अगर नहीं आया, तो फिर जोर मारना पड़ेगा–साधना करनी पड़ेगी और इसे लाना पड़ेगा। तो जिस साधक को, जिस संत को, साधन करते–करते यह योग्यता आई तो फिर–

'मैं तोहि अब जान्यो संसार।

बांधि न सकसि मोहि रघुपति के बल, प्रगट कपट आगार।

अब तुलसीदास किस ढंग से कहते हैं ? तो जब बल मिल जाता है भगवान का, तो ललकार देता है– निकल भाग, नहीं तो तुम्हें नष्ट कर देंगे। अब भगवान की कृपा मेरे ऊपर हो गई है–निकल। मेरे यहाँ तेरा कोई काम नहीं है। यही कबीर भी कहते हैं–

'ठगिनिया क्या नैना चमकावै।

कबिरा तेरे हाथ न आवै।।

माया तू मुझे क्या कला दिखाती है, मैं जानता हूँ। कि तू भगवान की राह में चलने वालों को किस तरह बहकाती है। मैं तेरी कला को जान गया हूँ। अब मैं तेरे हाथ नहीं आने वाला। इस तरह से साधक के अन्दर आत्म बल आना चाहिए।

जिसके हृदय में भगवान का आवेश आ जाता है, उसके अंदर संसार को ललकारने की शक्ति आ जाती है। भगवान की भक्ति दो प्रकार से होती है–एक होती है रोते–रोते भक्ति। एक होती है वीटो बना कर भक्ति। भगवान से भक्ति मांगो। भजन करो, शक्ति प्राप्त करो, फिर आगे बढ़ो। यह ऐसी भक्ति है। और एक दीन भाव से, भगवान से प्रार्थना करो, कि आप समर्थ हैं, मै दीन हीन हूँ। रोमांच करो, रोओ गाओ और जब सुनते–सुनते सुन लेंगे, तो फिर तुम्हें वहां से जो शक्ति मिलती है, ताकतवर शक्ति, तो उससे वीटो आ जायगा–विलपावर बन जायेगा।

इस तरीके से यह साधना जो है इतना बारीक विषय है, इतना मालीक्यूल विषय है, कि पकड़ते पकड़ते फटकता जा रहा है। जिस मन बुद्धि चित्त अहंकार से दुनिया के सारे काम होते हैं, जानकारी की जाती है, पढ़ाई की जाती है, उस मन बुद्धि चित्त अहंकार को खतम करके उसके बाद जो कुछ रहता है–उसमें हमें चलना है। तो यह मेटाफिजिक्स ऐसा–वैसा नहीं है–सबका मूल कारण है। इसमें तो एक ही है कि

जब तक अपने पास ईगो है, जब तक अपने पास करने की क्षमता है, यह जब तक समाहित न हो जायं – जब तक हमारा शरीर हमारा मन हमारा अंतःकरण सबकुछ अपना है – तब तक कुछ होता नहीं। जब हम आकाशवत हो जायं, न हम शरीर रह जायं, न हम अंतःकरण रह जायें, सब कुछ आप हो–जब ऐसा बन जायगा, तब भगवान हमें एक्सेप्ट (स्वीकार) करेंगे। अपने में मिलाएंगे। और जब तक यह है कि अगर साधना छूट जाय तो फिर क्या होगा ? न इधर के रहे न उधर के। तो कैसे होगा? यह तो तुम्हारे हाथ में है, यह दूसरे से थोड़े होगा। साधना करने वाले के, हमारे हाथ में है। इसके लिए भजन में फोर्स होना चाहिए। तीव्र वेग होना चाहिए। बिना फोर्स लिये नहीं हो सकता।

साधकों की चाल होती है। एक होती है पिपीलिका चाल, एक होती है मुनमुनिया चाल, एक होती है विहंगम चाल, एक होती है, पशु चाल। इस तरह चार पांच तरह की चालें हैं। तो हमें देखना चाहिए। कि साधना में हमारी गति क्या है? किस गति से चल रह हैं। अगर चींटी की चाल से चलेंगे, तो अनेक खतरे आ सकते हैं। क्योंकि आइटम ही ऐसा है ? अब आकाश में हम श्वासा लेते हैं। और आकाश में तमाम ऐसी संकल्प की तरंगे आती रहती हैं। जिसका हमने त्याग किया है, वह माता हमको याद करेगी, स्त्री याद करेगी, भाई याद करेगा, परिवार वाले याद करेंगे। उनका रिएक्शन हमारे दिमाग में आएगा। अगर इनको मारने की ताकत हमारे पास नहीं है। अगर सिंहिका को मारने की क्षमता हनुमान में नहीं है, तो परछाईं पकड़कर राक्षसी छल कर देगी। सुना है, रामायण में? पहले सुरसा मिली, उससे किसी तरह से छूटे, तो फिर सिंहिका मिल गई। समुद्र में बैठी, परछाईं पकड़ कर, खींच कर खा लेती थी।

"सोइ छल हनूमान सन कीन्हा।
तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा।।
ताहि मारि मारुतसुत बीरा।
वारिधि पार गयउ मति धीरा।।"

तो इस तरह से है। हम तो साधना में लगे हैं। भजन कर रहे हैं, और उधर कोई तुम्हारे प्रति विषय का संकल्प कर रहा है। तो वही है कि तुम्हारे में वह संकल्प रूपी परछाईं, पकड़ कर तुम्हें नष्ट करना चाहता है। तो अगर साधक में तीव्र वैराग्य नहीं है, हनुमान में क्षमता नहीं है, तो तुम्हें विषय रूपी पानी में घसीट कर खा लेगी–नष्ट कर देगी। इसलिए इसमें तो हमको हिम्मत बांधना है। यह तो साधक को

करना है। जब हमारे अंदर तीव्र वैराग्य आएगा–हमारे अंदर स्पीड आएगी, तब निकल पाएंगे और धीमी चाल वाला साधक तो मार खाएगा कहीं न कहीं। कितना काटेंगे, कहाँ तक काटेंगे। और जो विहंग चाल है, जैसे चिड़िया यहाँ से उड़ी–वहाँ पहुँच गई। कोई खतरा नहीं। यह हायर लेबल की गति है। और मन की गति से चलने वाला उत्तम साधक कहलाता है। सबसे तीव्र गति वाला।

दूसरा तरीका यह है, कि अगर तुम्हारे अन्दर अनुराग है, तो इस शरीर को रथ बनाओ, इन्द्रियों को घोड़े बनाओ, मन को लगाम बनाओ। और अपने इष्टदेव को बैठा दो इसमें। बागडोर दे दो उसके हाथों में, और तुम इसमें सजग होकर बैठ जाओ। डाइरेक्ट हो गया–सीधे। और युद्ध करो। युद्ध करना ही तो है, साधना करना। भजन करना, युद्ध करना है। अब युद्ध कैसे करना है? दुर्गुणों को मार कर निकालना है, और सद्गुणों को लेना है–युद्ध करना है। भजन किसको कहते हैं? भागे न विषयों की तरफ–भज–न। मन विषयों में न भागने पावे। साधना किसको कहते हैं। ये जो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, इंद्रियां सब विषयों में भाग रहे हैं– इन्हें साध लेना, साधना है। कान हमारे भगवान का गुणगान सुने, नेत्र हमारे भगवान का रूप देखें, सिर हमारा भगवान के चरणों में झुके, मन हमारा भगवान का संकल्प करे, चित्त चिंतवन भगवान का करे। इस तरह से सब भगवान में लग जायं तो फिर हिम्मत खुलेगी। तो फिर सीढ़ी वाइज, आगे बढ़ते जाएंगे। पहली भूमिका में जब तुम पहुँचोगे दूसरी में, तीसरी में और चौथी में तब फिर सत्वापत्ति–सत् और असत् का निर्णय करने में सक्षम होंगे। सत् का ग्रहण कर लोगे, असत् का त्याग कर दोगे। और फिर जब पांचवीं भूमिका में पहुँचोगे, तो अनासक्त हो जाओगे। आसक्ति का नाश हो जायेगा, यह असंसक्ति। और फिर पदार्थ अभावनी। जो यह पदार्थ दिखाई पड़ रहा है–यह कपड़ा न दिखाई दे, अपना इष्ट दिखाई दे। ऐसा रूप बन जाय, कि सब में अपना इष्ट ही दिखाई दे। हृदय में इष्ट का ध्यान करने को इसीलिए कहा जाता है। देखते–देखते ऐसा हो जायेगा कि फिर हर जगह इष्ट ही दिखाई देगा। जब मन में भगवान बैठा रहेगा तो विजातीय संकल्प वहां असर नहीं डाल पायेंगे। निर्जीव हो जायेंगे।

बाहर से कोई भी तुम्हारे स्वरूप को पकड़ कर अगर कोई संकल्प करता है तो तुम कहीं भी हो, वह तुम्हारे पास पहुँचेगा–यह तरंगें हैं। बड़ी तीव्र गति से चलकर पहुँच जाते हैं। इनकी गति अबाध होती है। जैसे स्प्रिंग है, उसे दबा लो और फिर छोड़ दो, तो बहुत देर तक कंपन करती है। राम बाण मारते थे रावण को, तो जितने बूंद खून गिरता था, उतने रावण बनकर लड़ने लग जाते थे। तो यह क्या है? अब

जैसे एक संकल्प आ गया काम का, क्रोध का, मोह का, लोभ का, आशा का, तृष्णा का, विषय का, वासना का और तुमने कहा अच्छा ठीक है, कोई बात नहीं, आ जाओ। तो फिर वह फांसी लगा देगा। फिर हजारों मर्तबा आएगा। वह रावण, पचासों रावण बनकर तुमसे लड़ने लगेगा। पचासों काम रूपीमेघनाद लड़ने लगेंगे। फिर हम साधना का काम नहीं कर सकते। यह सब गोस्वामी जी ने कितनी अच्छी चार्ट दी है, साधकों के लिए। यह सब अपने लिए है–साधकों को इसे लेना चाहिए। हिम्मत बांध कर साधक को करना चाहिए।

सबसे पहले तो आधार साधक को सोचना चाहिए कि भाई इस शरीर में तो कोई दम नहीं है। इस संसार में आदमी नंगा पैदा होता है, चाहे अमीर के घर आए चाहे गरीब के घर आए। कोई कोट पैंट पहन कर आता नहीं? और जब जाएगा तो खाली जायेगा। अपने आप आता है और चला जाता है। कोई साथ जायेगा नहीं। तो अब यह रह गया, प्रेजेन्ट वाला मामला। तो प्रेजेन्ट में यह हमारा सोचने का विषय होना चाहिए, कि यह जो शरीर रूपी मोटर है, इसमें अनेक जन्मों का पुण्य रूपी पेट्रोल है, तो यह क्यों चल रही है? यह हृदय रूपी इंजन क्यों काम कर रहा है? यह ब्रेन रूपी बैटरी क्यों काम कर रही है? यह गाइड हमें क्यों मिल गया है–हमने तो इसकी कल्पना नहीं की थी। यह ड्राइवर क्यों इसमें आकर बैठ गया है, शरीर रूपी मोटर में। तो यह सब पूर्व का किया हुआ है। कभी किया था पढ़ाई, अब फिर शुरू कर रहे हैं। अब एक आधार हमको मिल गया। यह ईश्वर की साधना रूपी मकान बनाने का आधार हमको मिल गया। और ईश्वर का दिया हुआ हमको जो यह मौका मिला है। यदि इसे हम फेंक दें। इसे हम न मानें, तो उससे तो हमें कोई फायदा नहीं होगा।

इसमें तो ऐसा नियम है, कि भगवान से खूब रोओ, गाओ। मीरा वाला सिद्धान्त। हम जब इसमें नहीं थे। हम खूब रोया करें, कि भगवान हमको बताओ कि हमको भजन करना है, कि नहीं। भजन करना है, तो चाहे गर्दन चली जाय, हम भजन करेंगे। और अगर नहीं करना हो तो बता दो, सही–सही। तो ऐसे मेहनत किया महीनों। तो कोई समाधान नहीं निकला। तो हमें यह बताना पड़ेगा। फिर आया, कि तुम भजन करो। भजन करना चाहिए। तो अब यही बैठ कर सोचें, कि भजन कैसे करें ? तो फिर एक दिन स्वप्न में देखे, कि हम बाबा बन गए हैं, जटा बढ़ा कर, और जंगल में भागे चले जा रहे हैं। और जितने घर के लोग हैं, सब विदाई कर रहे हैं, कि जाओ भजन करो। आशीर्वाद है। एक तो तरीका यह है। कि तुम खूब रोओ, गाओ, चिल्लाओ और घरवाले इज़ाजत दें–चाहे वो अंतर्जगत से दें।

एक तो तरीका यह है। यह तो संशय बीच में बना रहता है कि हम करें तो क्या करें? इधर भी मन है, उधर भी मन है। तो इस तरीके से अगर संयोग बन जाय तो साधक को सबसे पहले भगवान को स्मरण करना चाहिए। अपना इष्ट निश्चय कर लेना चाहिए। जिसमें मन लगे, वही इष्ट है। और फिर इष्ट के सम्मुख समर्पण करना चाहिए। और ऐसा वैसा नहीं। वह समर्पण ऐसा नहीं कि काल करके बाधित हो जाय। देश करके बाधित जो जाय। ऐसा समर्पण हो जैसा पार्वती का था।

अब मै जन्म संभुहित हारा। को गुन दूषन करै विचारा।

अब यह जीवन यह शरीर सब ईश्वर के लिए है। बस अब इसमें विचार करने की गुंजाइस ही नहीं रही। और एक जन्म ही नहीं, जन्म जन्म तक

'जनम जनम लगि रगर हमारी।

वरउं शंभु नतु रहौं कुमारी।।'

ऐसा समर्पण हो तब ठीक है। जैन महावीर अच्छे महात्मा हुए हैं। भगवान का नाम नहीं लिए कभी। न राम कहे, न शिव कहे, न ब्रह्म कहे, न निर्गुण कहे, न सगुण कहे। जैन महावीर। विचार में आया, यह दुनिया क्या है- कुछ नहीं। बस बैठ गए, भजन करेंगे। और इष्ट को पकड़ लिया। अब इष्टदेव अपने से करें। हमने सब कुछ सौंप दिया तुम्हारे चरणों में। न लड़ाई रही, न झगड़ा रहा।

आदमी अगर चाहता है कि हम कर लेंगे। जैसे दुर्योधन कहता था कि हम कूट-कूट कर बिछा देंगे, पांडवों को। हम सुई की नोंक के बराबर भी नहीं दे सकते। हमारे पास बड़े-बड़े योद्धा हैं। पितामह भीष्म हैं, जिनको इच्छामृत्यु है। कोई उन्हें जीत नहीं सकता। क्या कर लेंगे, वे लोग हमारा? कर्ण है, जो सबको मार सकता है, द्रोणाचार्य है जो सबका गुरु है। ये पाण्डव करेंगे क्या? क्यों समझौता करें हम? हम सुई की नोंक के बराबर भी नहीं देंगे। हो गया। अगर इसी प्रकार अर्जुन और ये भाई (पांडव) भी बन जाते, तो जैसे वो हुए वैसे ये भी हो जाते। लेकिन योगी के अंतःकरण की रिसर्च है, उसने पी.एच.डी. किया है। महाभारत। अपनी रिसर्च का कोई टाइटल होता है-सब्जेक्ट (टाइटल)। तो क्या है-महाभारत। और टाइटल में उस रिसर्च का आशय-सारांश दिया रहता है। तो देखिए, महा कहते हैं डिग्री को, भा कहते हैं ज्ञान को, रत कहते हैं लगे हुए को। महान ज्ञान में रत है जो। कहाँ वहाँ युद्ध हुआ? कहाँ तीर, तलवार चले? यह तो खाली ना समझी की बात है। यह संसार तो असत्य है। संसार की कोई चीज़ क्या सत्य है? मान लिया जाय कृष्ण हुए ही होंगे, तो क्या? आज तो नहीं हैं। अब काल करके कितना भेद हो गया बीच में। और

परमात्मा उसको कहते हैं, कि जो पहले भी था, आज भी है, और आगे भी रहेगा। यह सिद्धान्त है। तो इसलिए यह रिसर्च मात्र है। किसी योगी के हृदय में यह साधना हुई, और उसने उसे लिपिबद्ध कर दिया। शीर्षक दे दिया महाभारत।

अंधा धृतराष्ट्र अज्ञान। मोह दुर्योधन। दुर्बुद्धि दुशासन। कौरवों का दल बाएं तरफ। और दाहिने, अनेक जन्मों का पुण्य रूपी पांडु। धर्म रूपी धर्मराज। भाव रूपी भीम। अनुराग अर्जुन। नियम नकुल। सत्य सहदेव। यह पांडवों का दल है। जिस साधक के हृदय में धर्म, भाव, अनुराग, नियम, सत्य। और ध्यान रूपी द्रोपदी है। ये पांचों उसके पति हैं। तो किसी के पांच पति थोड़े होते हैं। बाहर ऐसा होता, तो परंपरा से और भी आगे देखने को मिलते। लेकिन ऐसा नहीं मिलता। इसलिए यह आध्यात्मिक विषय है। और आत्मा कृष्ण है। वह देशकाल से अबाधित तत्व है कृष्ण के पास ऐसी कला है, कि हारे हुए को जिता सकता है, जीते हुए को हरा सकता है। राई को पहाड़ बना सकता है और पहाड़ को राई बना सकता है। सब कुछ कर सकता है। बज्र से कठोर हो सकता है, और नवनीत से कोमल हो सकता है–यह कला परमात्मा की है। तो जब हम परमात्मा को कैच कर लेंगे। उसको गाइड बनाएंगे। तो हमारी गाड़ी क्यों नहीं संसार रूपी घटिया के ऊपर चढ़ जायगी। इसमें दृढ़ विश्वास होना चाहिए, दृढ़ निश्चय होना चाहिए। और अपनी कमी जो है, वह तो है ही। इसमें दो राय है नहीं। अगर कमी न हो, तो साधना क्यों करे साधक?

तो अपने को हमें भगवान को सौंपना है। और उन्हें यह श्रेय देना है, कि अगर भगवान ने हमारे ऊपर अह्लादिनी कृपा कर दी है। और बगैर बताए, बगैर कहे, हमें यह अवसर दिया है, तो हम इसको अलौकिक मानते हैं–अलौकिक आधार मानते हैं, और इसी आधार पर हम अपने को ईश्वर के चरणों मेंसौंप दें। गीता में अर्जुन को कृष्ण ने कई सिद्धांत बताए 18 अध्याय में। अर्जुन सबको नकारता चला गया। मैं यह सब नहीं कर सकता। मैं इस मन को वश करने में सक्षम नहीं हूँ। यह तो वायु से भी वेगवान है। और कहां? दोनों दलों के बीच, युद्ध के मैदान में खड़े हैं। युद्ध में कहीं ज्ञान बताया जाता है? मारामारी के बीच में। ये कहाँ की बात है? लोगों की समझ में नहीं आता। मन को रोकना है, कि युद्ध करना है। तो वहाँ युद्ध कहाँ हुआ। यह तो साधक के लिए है। इस तरह से जो साधक अंतर्जगत में चला जाता है। वाह्य जगत से हाथ जोड़ कर उससे छुट्टी पाना चाहता है। उसको कहते हैं, साधना करने वाला साधक। और वह सबसे बड़ा बन जाता है। वही साधक बनते–बनते, तमाम दिक्कतों का सामना करते–करते। गुरु का लात सहते–सहते कामयाब होता है। कोई गाली देता है, हंसता रहता है–

'बूंद अघात सहहिं गिरि कैसे।

खल के बचन संत सह जैसे।।'

संत बन जाता है। जिसके लिए भगवान कहते हैं–

'सातवं सम मोहि मय जग देखा।

मोते अधिक संत कर लेखा।।'

तो अपने गुरु का ध्यान करो। और लगे रहो, लगे रहो। और जो ये आती हैं शंकाएं विजातीय भावना की, यह किसी का दोष नहीं है–हर आदमी को ये क्लेश, कर्म, विपाक और आशय ये चार, दिन भर तोड़ते रहते हैं।

'क्लेश कर्म विपाक आशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेषः ईश्वरः।'

इन चार से मुक्त है, वह मुक्त परमात्मा है।

अविद्याऽस्मिता राग द्वैष अभिनिवेशाः क्लेशाः।

ये पांच क्लेश होते हैं, ये आदमी को बहुत परेशान करते हैं।

प्रारब्ध संचित और क्रियमाण ये तीन प्रकार के कर्म होते हैं। और विपाक, परिणाम। हर आदमी परिणाम चाहता है। यह बहुत खराब है। कर्तव्य करना हमारा धर्म है–परिणाम हम नहीं चाहें। यह ईश्वर के हाथ में है। कर्तव्य करें और ईश्वर को समर्पित कर दें, इसको निष्काम भावना कहते हैं। इसका जो पालक है, वह ईश्वर को वश में कर लेता है। और अगर कल्पना कर दिया। भजन किया और डिमांड कर दिया। तो भजन हमारे पास रह नहीं गया, तो फिर सर्कुलेशन वाला हो गया। फिर जिन्दा होगा फिर मरेगा, फिर दुनिया में आएगा। इसलिए अनपेक्ष भजन करना चाहिए। अपेक्षा रहित, आशय रहित। तो इस तरीके से आगे बढ़ो। धीरे–धीरे भगवान की कृपा अगर इसी प्रकार होती रही। तो साधक को राहत मिलती है, दृढ़ता मिलती है, मार्ग दर्शन मिलता है। और आगे बढ़ेगा।

भगवान उसे देखते हैं–गलती तो नहीं कर रहा है। भजन के लिए भगवान बताएंगे, तो भजन में बैठ जाना चाहिए। अगर सोने का आदेश हो, तो सो जाओ, बताएगा। अंग फड़केगा। 2 बजे जाग गए, बैठजाओ, अगर सोने को कहे सो जाओ। उतने टाइम बोलेगा। सिग्नल देगा। अनुकूल अंग फड़के तो बैठ जाओ। अगर बायां फड़क जाए तो उठ जाओ। तुम्हें आलस आ जाएगा भजन नहीं बनेगा। अगर दाहिना हाथ फड़कता है, तो भजन में बैठो। दाहिना अंग फड़कने से लाभ है। इस तरीके से भजन करता रहे। अगर दाहिने पीठ फड़के तो सो जाय। अगर खाना खा ले और

दाहिने पेट फड़क जाय, तो तामसी का बाप हो, तो तुम्हारे लिए सात्विकी बन जायेगा, अनुकूल हो जायगा–ईश्वरीय आदेश हो गया। एक पैसा कोई चढ़ाता है तो उसकी भी कोई कल्पना रहती है। जब हमको सीधा देता है कोई। तो फिर मौका पाकर पैर पकड़ लेगा। तो मांगे से है खून भिक्षा, बिन मांगे है दूध। दूध भिक्षावृत्ति ठीक रहती है। भगवान का भजन होता है। और जिसमें खून हो गया– जिसमें मांग हो गई, डिमांड हो गई, वह कैसे सात्विकी होगा। इसलिए दूध और खीर और चीनी को सात्विकी नहीं कहते। तामसी लहसुन और प्याज और मछली मांस को नहीं कहते। तामसी उसको कहते हैं, जो चीज़ हम अपनी इच्छा से डिमांड करके मांगे। आसक्ति से जो चीज़ मिले – वह तामसी है। और जो उरप्रेरक रघुवंश विभूषण। भगवान की प्ररेणा से मिले, सात्विकी वह मानी जायगी। तो वह भिक्षा हमें ठीक रखेगी, और हमारा भजन ठीक होगा। दूसरा–साधक को इतना विवेक होना चाहिए कि वह भगवान से अपने, पूछ–पूछ कर उसका पालन करे। सबसे उत्तम यह है। और यह बार–बार अभ्यास करे। अब इतने दिन से साधना करते हैं, ध्यान करते हैं। भगवान से कुछ पूछा, तो उत्तर नहीं देते। तो रोओ उससे, गिड़गिड़ाओ उससे, उससे पूछो। मैं कुछ नहीं जानता। मुझे बताइये। मैं आपका हूँ। यह संसार समुद्र है, इसमें विषय रूपी पानी भरा है, माया मगर है इसमें। मैं इसमें फंस गया हूँ। मुझे यह माया कभी भी पकड़ सकती है। इसलिए मुझे बचाओ। हे मेरे इष्टदेव! हे मेरे गुर्देव! हे मेरे परमात्मा! मुझे बचा लो। मुझे ऐसा रंग दो, जिससे कि मैं उसमें बना रहूँ और मगर मुझे पकड़ने के लिए चीन्ह न पावै। आप ऐसा मेरे ऊपर कलर छोड़ दीजिए। उपाय कीजिए। तरीका कीजिए। ऐसी युक्ति दे दीजिए। ऐसे खूब रोओ गाओ। ऐसी भक्ति दे दीजिए। मैं कुछ लेना नहीं चाहता आपसे। मैं तो अपने आप को देना चाहता हूँ।

अनगढ़ मग है पूरों का,
यहां न काम अधूरों का।
कच्चा औ मटमैला रस्ता,
कच्चे कायर कूरों का।
सीधा साफ अमीरी रास्ता,
सच्चे साहब सूरों का।
जप तप करके स्वर्ग कमाया,
ये तो काम मजदूरों का।

अगर हमने भजन किया और कुछ मांग लिया, तो यह तो मजदूरी है। हमने भजन किया, परिश्रम किया और उसके बदले ले लिया। यह ठीक नहीं। यह तो निवृत्ति मार्ग नहीं है, यह तो प्रवृत्ति मार्ग है।यह तो सर्कुलेशन है, आवागमन है। भजन किया, फल भोग किया, फल भोग किया, फिर नर्क में जाएंगे। फिर तपस्या किया फिर फल भोग किया, फिर नरक में जायेंगे। यह तो सबका हो रहा है। इसमें नहीं जाना हमको। हमें तो–

'करना सही न लेना कुछ'

हमारा भजन करना काम है, हमारा ईश्वर को पाना काम है, हमें उससे कुछ मांगना नहीं है। डिमांड नहीं करनी है।

'करना सही न लेना कुछ,
ये बाना झांखर झूरों का।'

कोई यूनीफार्म नहीं, कोई वेश नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं, कोई मजहब नहीं। कोई मजहब अपने पीछे लगा लेते हो, तो वह भी तो एक फितूर ही है। कोई सम्प्रदाय विशेष में तो ईश्वर है नहीं। ईश्वर तो इनमें है नहीं। अलग–अलग इनके दर्शन हैं। इन्हें दर्शन थोड़े कहते हैं। दर्शन तो यह है कि–

'ईशावास्यमिदं सर्वम्'

हर सम्प्रदाय में है, हर धर्म में है, हर जगह है। अगर ऐसा सार्वभौमिक सिद्धान्त नहीं मिलेगा, ऐसी समझ जब तक नहीं आएगी, तब तक कल्याण कैसा? संभव नहीं। एक देशीय भगवान नहीं है। एक प्रांतीय भगवान नहीं हैं। एक भाषीय भगवान नहीं होता, है। एक जाति वाला भगवान नहीं होता। वह तो सर्व देशीय, सर्व भाषीय, सर्व जातीय है। इस तरह से, अगर हमारा स्तर उठकर, उस स्तर पर नहीं पहुँचता, तब तक हम आलराउंडर हो कैसे सकते हैं?

हरिः